I

Lecture Series No: 58

Online class
Date – [illegible]/2022
Day – [illegible]
Time – 10:30 to 11
A.M.

Topic:
(1) Nyaya.

Dr. Sunita Kumari
Deptt. of Philosophy,
B.A Part II
Paper – III (H.)
A.N.D. College Shahpur Patory,
Samastipur.

Ans. –>

'प्रत्यक्ष' शब्द का प्रयोग प्रमाण और प्रमा दोनों ही अर्थों में किया जाता रहा है। ऐसे व्यापक प्रयोग का एकमात्र कारण यह है कि यह यथार्थ ज्ञान का एक साधन भी है और साध्य भी।

प्रत्यक्ष का प्रमाणों में प्रथम स्थान है, क्योंकि अन्य सभी प्रमाणों का यह मूल आधार है। अतः प्रत्यक्ष यथार्थज्ञान का एकमात्र साधन है।

न्याय-वार्तिक टीका में इसके महत्व को यहाँ इसके मूल आधार होने की बात को बड़े ही स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया गया है। –> सर्वप्रमाणं प्रत्यक्षपूर्वकत्वात्।

P.T.O.

प्रत्यक्ष शब्द प्रति + अक्ष दो शब्दों के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ (क्रमशः — सामने अर्थ - विस्तार कर) क्रमशः — सामने और आँख होता है। किन्तु प्रत्यक्ष शब्द का अर्थ है। — आँख के समक्ष न मानकर इसका अर्थ - विस्तार कर दिया गया है तथा इसमें सामान्य ज्ञानेन्द्रियों और वस्तु के निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान माना जाता है।

इसी अर्थ को ध्यान में रखकर न्याय दर्शन के संस्थापक गौतम ने (न्याय न्याय सूत्र! — में इसकी परिभाषा दी है)
'इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानं प्रत्यक्षम्'
(ज्ञान

इसी परिभाषा से स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष ज्ञान की उत्पत्ति के लिए इन्द्रिय एवं अर्थ दोनों का रहना आवश्यक है। रहना ही नहीं दोनों का संबंध अथवा सन्निकर्ष भी आवश्यक है। "END"